मन्सा सेवा - 59

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ अफ्रिका वाले कौन-सी शक्ति अपनायेंगे? इन्हों को शान्ति की शक्ति पसन्द है क्योंकि अफ्रिका में घमसान बहु तहोता है ना तो शान्ति की शक्ति पसन्द है। **तो शान्ति की शक्ति की निशानी है - जहाँ शान्ति होगी, वहाँ सदा सन्तुष्ट होंगे। क्योंकि अशान्त करती है असन्तुष्टता। जहाँ सन्तुष्टता होगी वहाँ शान्ति होगी और जहाँ शान्ति होगी वहाँ सन्तुष्टता होगी।**

➳ _ ➳ **और शान्ति की शक्ति वाला सदा ही खुश मिज़ाज़ होगा। जितनी शान्ति उतनी खुशी उसके चेहरे से, चलन से अनुभव होगी। तो शान्ति की शक्ति की निशानी दिखाना। सदैव सबका चेहरा हर्षित हो। कैसी भी परिस्थिति हो लेकिन खुशी को नहीं छोड़े।**

➳ _ ➳ अपनी प्रापर्टी है ना तो प्रापर्टी को कोई छोड़ता है क्या? **तो शान्ति की शक्ति की निशानी है - सदा खुश रहना और खुशी बांटना शान्ति की शक्ति से सहज मंसा सेवा कर सकते हैं। जितना शान्त रहते हैं उतनी मंसा सेवा बड़ी शक्तिशाली होगी।**

➳ _ ➳ तो अफ्रिका वाले ऐसे शान्ति के शक्ति का स्वरूप बन इस वर्ष का इनाम लेना। सभी इनाम लेंगे ना! अच्छा! रिज़ल्ट आती रहेगी। हरेक सेन्टर के हर स्टूडेन्ट की रिज़ल्ट आती रहेगी। **फिर जो नम्बर आगे लेगा, तीन नम्बर को इनाम देंगे। बाकी सेकण्ड नम्बर देंगे। तो शान्त रहना है, हलचल में नहीं आना। कुछ भी हो जाये, शान्त। तो आपकी शान्ति हलचल वालों को भी शान्त कर सकती है। ऐसे पॉवरफुल वायब्रेशन फैलाना। यह सेवा वाणी से नहीं हो सकती लेकिन मंसा से हो सकती है। (07/03/1995)**

➢ पुरुषार्थ के लिये मुख्य बिंदु

➳_ ➳ **शांति है तो, संतुष्टता है**

→ **और संतुष्टता है तो, शांति है**

■ **शांति है तो खुश है**

▶ **खुश है, तो शांति है**

➳_ ➳ अशांति का कारण क्या है ?

→ **असंतुष्टता**

➳_ ➳ असन्तुष्टता का कारण क्या है ?

→ **अप्राप्ति**

➳_ ➳ अप्राप्ति का कारण क्या है ?

→ **इरछा**

■ जब तक मनुष्य के मन में इरछाये बहुत है

- ▶ तबतक उनका मन शांत हो ही नहीं सकता है

➢ शांति

➳_ ➳ **अध्यात्म का मार्ग ही शांति और सुख की खोज का मार्ग है**

→ जो इस मार्ग पर निकला है उसे उसकी इरछाओ को कम करना होगा

- यदि इस मार्ग पर भी इरछा रख के चले
  - ▶ तो शांति नही मिल पायेगी

→ **इच्छाये कभी भी पूर्ण नहीं होती है**

→ **उनका स्वभाव / फितरत ही अपूर्णता है**

- एक इरछा पूर्ण होते ही दूसरी इरछा जागती है
  - ▶ उसकी पूर्ति के लिये मन भागता है, हलचल होती है
  - ▶ और फिर से वही अशांति और बेचैनी जागृत होती है

➳_ ➳ **जितना मन शांत होगा उतनी ही जल्दी वो सकाश दे सकेगा**

→ स्वतः ही उनसे शांति के प्रकम्पन फैलने लगेंगे

- तो मन्सा सेवा करने के लिये हमे मन को शांत रखना होगा

➳_ ➳ कुछ भी क्यों न हो जाय, कितना भी अशांति का वातावरण हो

→ हमे शांत ही रहना है

- तो आपकी शांति
- हलचल वालो को
  - ▶ शांत कर देगी

➳_ ➳ वास्तविक शांति अर्थात **कितनी भी हलचल हो हम शांत रहे**

➳_ ➳ वास्तविक शांति अर्थात **भीड़ में रहते हुये भी एकांत का अनुभव करना**

→ मन को ऐसी ट्रेनिंग देना की

- जिसमे वो कठिन से कठिन परिस्थिति में शांत रहे

→ जहा कोई हलचल नहीं वहा शांत रहना तो, बहुत आसान है

- **पर हलचल में शांत रह पाना यही वास्तविक शांति है**

➳_ ➳ चारो तरफ हलचल हो और हम शांत रहे

→ यही हमारी कसोटी है

- उस पर हमे खरा उतरना है
  - ▶ तो कहेंगे मन शांत है

➳_ ➳ सारी जो अध्यात्म की दौड़ है

→ इस ज्ञान योग की

- वह इसीलिए है की,
- मन शांत हो जाय
- स्टेबल हो जाय

- स्थिर हो जाय
  - क्युकी PEACEFUL MIND से ही PEASEFUL VIBRATION फैला सकेंगे

➢➢ पुरुषार्थ

➳_ ➳ **एक बाबा को ही हमे अपना आधार बनाना है**

→ और किसी को भी अगर आधार बनाया

- तो धोखा ही मिलेगा
  - और दुःख होगा

➳_ ➳ तो इसके लिये स्वयं को बार बार देखते रहना है की,

→ मैं शांत कितना हु ?

→ मैं खुश कितना हु ?

→ मैं सुखी कितना हु ?

→ मैं संतुष्ट कितना हु ?

- भगवान मिल गया फिर भी असंतुष्टत्ती
  - **भगवान मिला माना सबकुछ मिल गया**
  - तो मन असंतुष्ट नहीं रहना चाहिये
- **एक चीज के लिये असन्तुष्टता जरुर चाहिये**
  - और वो है **पुरुषार्थ** के लिये
  - उसमे असन्तुष्टता चाहिये
  - की अभी मुझे और करना है, और करना है
  - **रुकना नहीं है, और आगे बढ़ते जाना है**
  - इसमें बेचैनी चाहिये
  - नींद फिट जानी चाहिये
- जबतक भगवान धरती पर आकर न कहे की
- अब बस करो बहुत हो गया, STOP करो
  - तब तक हमे रुकना नहीं है
  - आगे बढ़ते ही जाना है, बढ़ते ही जाना है

➳_ ➳ हमे पुरुषार्थ करते ही जाना है

→ आगे बढ़ते ही जाना है

- कही पर भी, किसी के लिये भी रुकना नहीं है
  - **“EKLA CHALO RE” यही पुरुषार्थ है**
  - पुरुषार्थ में किसी का भी आधार नहीं लेना है
  - निराधार रहना है

➳_ ➳ जितना हम व्यक्तियों के आधार से मुक्त होंगे

→ हममे एक अनोखी शक्ति भर जायेगी

- एक अनोखा अनुभव होने लगेगा
  - तब वास्विक शक्ति का पता चलता है